Dharmapuri Narahari Stuti

धर्मपुरीनरहरीस्तुतिः

Document Information

Text title : Dharmapuri Narahari Stuti

File name : dharmapurInaraharIstutI.itx

Category : vishhnu, koriDevishvanAthasharmA

Location : doc_vishhnu

Author : koriDe vishvanAthasharmA, dharmapurI

Transliterated by : koriDe vishvanAthasharmA

Proofread by : koriDe vishvanAthasharmA

Acknowledge-Permission: Koride Vishwanatha Sharma

Latest update : February 19, 2018

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

November 22, 2022

sanskritdocuments.org

धर्मपुरीनरहरीस्तुतिः

ॐ गँ गणपतये नमः ।
नरहरिं भजे धर्मपूर्विभुम् भरणभूषितं भूषित प्रभम् ।
जलधिपुत्रिका सेविताङ्घ्रिकं हरिनराकृतिं सैंहिकाननम् ॥ १॥

नरहरिं भजे धर्मपूर्विभुम् ।
हरिवराननं घातुकान्तकं श्रितजयप्रदं चक्रधारिणम् ।
भुजगशायिनं भूरिदायिनं नरहरिं भजे धर्मपूर्विभुम् ॥ २॥

ऋषिवराश्रितं ऋग्भिरर्चितं विदितवेद्यकं वेदगम्यकम् ।
श्रितवरार्थिने कल्पवृक्षकं नरहरिं भजे धर्मपूर्विभुम् ॥ ३॥

द्विजबुधैः सदा पूजितं स्तवैः दितिजबालकप्राणरक्षणे ।
दितिजमन्दिरे स्तम्भसम्भवं नरहरिं भजे धर्मपूर्विभुम् ॥ ४॥

सुजनभक्तकान् सक्तरक्षकं कुजनशिक्षणे सक्तचित्तकम् ।
मकरमौखिकात् नागरक्षकं नरहरिं भजे धर्मपूर्विभुम् ॥ ५॥

सुरपतेः सुखात् सञ्चयाघगां मुनिसतीं वरां पादुकोद्धृतम् ।
निरतभाविनां पापनाशकं नरहरिं भजे धर्मपूर्विभुम् ॥ ६॥

विहितपापधिं कालकालगं हरिरितीरितं निर्मलङ्करम् ।
यदियमुच्यतेऽजामिलादिना नरहरिं भजे धर्मपूर्विभुम् ॥ ७॥

निगमरक्षणे मत्स्यकायिनं अमृतसाधने कूर्मवेषिनम् ।
अवनिपालने श्रीवराहकं नरहरिं भजे धर्मपूर्विभुम् ॥ ८॥

दनुजमारणे सैंहिकाननं बलिविमर्दने वामनाकृतिम् ।
कुपतिभञ्जने भार्गवद्विजं नरहरिं भजे धर्मपूर्विभुम् ॥ ९॥

रघुकुलोद्भवं रावणान्तकं द्रुपदात्मजावने कृष्णरूपिणम् ।
शमनसाधने बुद्धरूपिणं नरहरिं भजे धर्मपूर्विभुम् ॥ १०॥

कलिविमर्दने कल्किदेहिनं अभयरूपिणं आश्रिताश्रयम् ।
नतमुखोऽस्म्यहं नैकधाकृतिं नरहरिं भजे धर्मपूर्विभुम् ॥ ११॥

इति कोरिडे विश्वनाथशर्मणाविरचिता धर्मपुरीनरहरीस्तुतिः समाप्ता ।

Composed by Koride Vishwanatha Sharma, Dharmapuri, Telangana

Proofread by Koride Vishwanatha Sharma.

Dharmapuri Narahari Stuti

pdf was typeset on November 22, 2022

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*